प्रेमचंद के फटे जूते

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

① पाँवों में केनवस के जूते हैं, जिनके बंद बेतरतीब बँधे हैं। लापरवाही से उपयोग करने पर बंद के सिरों पर की लोहे की पतरी निकल जाती है और छेदों में बंद डालने में परेशानी होती है। तब बंद कैसे भी कस लिए जाते हैं।

दाहिने पाँव का जूता ठीक है, मगर बाएँ जूते में बड़ा छेद हो गया है जिसमें से अँगुली बाहर निकल आई है।

मेरी दृष्टि इस जूते पर अटक गई है। सोचता हूँ–फोटो खिंचाने की अगर यह पोशाक है, तो पहनने की कैसी होगी? नहीं, इस आदमी की अलग-अलग पोशाकें नहीं होंगी–इसमें पोशाकें बदलने का गुण नहीं है। *(पृष्ठ 61)*

प्रश्न

(*i*) यहाँ किसके जूतों की बात की गई है?

(क) प्रेमचंद के (ख) हरिशंकर परसाई के

(ग) नाना साहब के (घ) इनमें से कोई नहीं

(*ii*) बेतरतीब बँधे होने से आशय है–

(क) कसकर बँधे होना (ख) ढीले बँधे होना

(ग) लापरवाही से बाँधे गए (घ) इनमें से कोई नहीं

(*iii*) फोटो में किस पैर की अँगुली निकली हुई है?

(क) दाहिने (ख) बाएँ

(ग) दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं

(*iv*) पोशाक बदलने का गुण न होने से किस विशेषता का पता चलता है?

(क) उन्हें पोशाकें बदलने का शौक था (ख) पोशाकें बदलने का तरीका मालूम न था

(ग) वे दिखावे की भावना से दूर रहते थे (घ) वे अपनी पोशाकें सँभालकर रखते थे

(*v*) 'फोटो खिंचाने की अगर यह पोशाक है तो पहनने की कैसी होगी' का वाक्य-भेद कौन सा है?

(क) विधानवाचक वाक्य (ख) संदेहवाचक वाक्य

(ग) इच्छासूचक वाक्य (घ) प्रश्नवाचक वाक्य

उत्तर

(*i*) (क) प्रेमचंद के

(*ii*) (ग) लापरवाही से बाँधे गए

(*iii*) (ख) बाएँ

(*iv*) (ग) वे दिखावे की भावना से दूर रहते थे

(*v*) (घ) प्रश्नवाचक वाक्य

② मैं चेहरे की तरफ़ देखता हूँ। क्या तुम्हें मालूम है, मेरे साहित्यिक पुरखे कि तुम्हारा जूता फट गया है और अँगुली बाहर दिख रही है? क्या तुम्हें इसका ज़रा भी अहसास नहीं है? ज़रा लज्जा, संकोच या झेंप नहीं है? क्या तुम इतना भी नहीं जानते कि धोती को थोड़ा नीचे खींच लेने से अँगुली ढक सकती है? मगर फिर भी तुम्हारे चेहरे पर बड़ी बेपरवाही, बड़ा विश्वास है! फोटोग्राफर ने जब 'रेडी-प्लीज़' कहा होगा, तब परंपरा के अनुसार तुमने मुसकान लाने की कोशिश की होगी। *(पृष्ठ 61)*

प्रश्न

(*i*) लेखक किसके चेहरे की ओर देखता है?

(क) प्रेमचंद के (ख) सालिम अली के

(ग) जाबिर हुसैन के (घ) इनमें से कोई नहीं

***(ii)* साहित्यिक पुरखे किसे कहा गया है?**

(क) जयशंकर प्रसाद को | (ख) प्रेमचंद को
(ग) वृंदावन लाल वर्मा को | (घ) शरतचंद चट्टोपध्याय को

***(iii)* गद्यांश से साहित्यिक पुरखे की किस विशेषता का पता चलता है?**

(क) उसे किसी की परवाह नहीं है | (ख) उसे अपनी ढँकने के तरीके का ज्ञान नहीं है
(ग) उसे किसी बात का शर्म नहीं है | (घ) उसे दिखावा पसंद नहीं है

***(iv)* फोटो खिंचवाते समय किस परंपरा की ओर संकेत किया गया है?**

(क) फोटोग्राफर से अच्छी फोटो बनाने के लिए अनुरोध की
(ख) नए कपड़े पहनने की
(ग) अच्छे जूते पहनने की
(घ) चेहरे पर मुस्कान लाने की

***(v)* 'साहित्यिक पुरखे' शब्दों में साहित्यिक शब्द .... है।**

(क) संज्ञा | (ख) सर्वनाम
(ग) विशेषण | (घ) क्रिया।

उत्तर

(i) (क) प्रेमचंद के
(ii) (ख) प्रेमचंद को
(iii) (घ) उसे दिखावा पसंद नहीं है
(iv) (घ) चेहरे पर मुस्कान लाने की।
(v) (ग) विशेषण

③ तुम फोटो का महत्त्व नहीं समझते। समझते होते, तो किसी से फोटो खिंचाने के लिए जूते माँग लेते। लोग तो माँगे के कोट से वर-दिखाई करते हैं। और माँगे की मोटर से बारात निकालते हैं। फोटो खिंचाने के लिए तो बीवी तक माँग ली जाती है, तुमसे जूते ही माँगते नहीं बने! तुम फोटो का महत्त्व नहीं जानते। लोग तो इत्र चुपड़कर फोटो खिंचाते हैं जिससे फोटो में खुशबू आ जाए! गंदे-से-गंदे आदमी की फोटो भी खुशबू देती है! *(पृष्ठ 62)*

प्रश्न

***(i)* फोटो का महत्त्व कौन नहीं समझता है?**

(क) प्रेमचंद | (ख) हरिशंकर परसाई
(ग) सालिम अली | (घ) जयशंकर प्रसाद

***(ii)* 'लोग तो माँगे के कोट से वर-दिखाई करते हैं'–के माध्यम से किस पर व्यंग्य किया है?**

(क) लोगों की गरीबी पर | (ख) दिखावा करने की प्रवृत्ति पर
(ग) सजने, सँवरने की प्रवृत्ति पर | (घ) वर-दिखाई की प्रवृत्ति पर।

***(iii)* गद्यांश से फोटो खिंचाने वाले की किस विशेषता का पता चलता है?**

(क) वह संकोची है | (ख) उसे किसी से माँगना अच्छा नहीं लगता है
(ग) उसे लोगों की परवाह नहीं है | (घ) उसे दिखावा पसंद नहीं है।

***(iv)* 'जिससे फोटो में खुशबू आ जाए' का आशय है ....।**

(क) फोटो से महक आ जाए | (ख) फोटो सबसे अलग नजर आए
(ग) फोटो अच्छी बने | (घ) इनमें से कोई नहीं।

(v) 'वर-दिखाई' शब्द में कौन-सा समास है?

(क) अव्ययीभाव (ख) द्विगु समास
(ग) कर्मधारय (घ) तत्पुरुष समास

उत्तर

(i) (क) प्रेमचंद
(ii) (ख) दिखावा करने की प्रवृत्ति पर
(iii) (घ) उसे दिखावा पसंद नहीं है
(iv) (ग) फोटो अच्छी बने
(v) (घ) तत्पुरुष समास

④ टोपी आठ आने में मिल जाती है और जूते उस ज़माने में भी पाँच रुपये से कम में क्या मिलते होंगे। जूता हमेशा टोपी से कीमती रहा है। अब तो जूते की कीमत और बढ़ गई है और एक जूते पर पचीसों टोपियाँ न्योछावर होती हैं। तुम भी जूते और टोपी के अनुपातिक मूल्य के मारे हुए थे। यह विडंबना मुझे इतनी तीव्रता से पहले कभी नहीं चुभी, जितनी आज चुभ रही है, जब मैं तुम्हारा फटा जूता देख रहा हूँ। तुम महान कथाकार, उपन्यास-सम्राट, युग-प्रवर्तक, जाने क्या-क्या कहलाते थे, मगर फोटो में भी तुम्हारा जूता फटा हुआ है! *(पृष्ठ 62)*

प्रश्न

(i) टोपी और जूते के मूल्य में क्या संबंध रहा है?

(क) दोनों का मूल्य बराबर रहा है (ख) टोपी का मूल्य अधिक रहा है
(ग) टोपी का मूल्य जूते से सदैव कम रहा है (घ) इनमें से कोई नहीं

(ii) जूते पर टोपियाँ न्योछावर होने का तात्पर्य क्या है?

(क) गुणवानों के समक्ष ताकतवर झुकते हैं
(ख) ताकतवर के समक्ष गुणवान भी झुकते हैं
(ग) जूता और टोपी पहने व्यक्ति पर कोई भी न्योछावर हो सकता है
(घ) एक जूते का वजन कई टोपियों के बराबर होता है

(iii) प्रेमचंद जूते और टोपी के अनुपातिक मूल्य के किस तरह मारे थे?

(क) प्रेमचंद का जूता फटा पर टोपी ठीक थी (ख) प्रेमचंद टोपी खरीद सकते थे, पर जूता नहीं
(ग) प्रेमचंद न टोपी खरीद सकते थे न जूते (घ) प्रेमचंद को मान सम्मान तो मिलता था पर वे धनहीन थे

(iv) लेखक को निम्नलिखित में से कौन-सी विडंबना चुभ रही है?

(क) प्रेमचंद के गुणवान होने की विडंबना
(ख) प्रेमचंद के उच्चकोटि के साहित्यकार होने की विडंबना
(ग) प्रेमचंद जैसे उच्च कोटि के साहित्यकार के धनहीन होने की विडंबना
(घ) प्रेमचंद के उपन्यास सम्राट होने की विडंबना

(v) अब तो जूते की कीमत और बढ़ गई है का भाव है–

(क) टोपी का दाम घट गया है (ख) जूते बहुत महँगे हो गए हैं
(ग) गुणवान को अधिक सम्मान दिया जा रहा है (घ) ताकतवर को अब अधिक सम्मान दिया जाने लगा है

उत्तर

(i) (ग) टोपी का मूल्य जूते से सदैव कम रहा है।
(ii) (ख) ताकतवर के समक्ष गुणवान भी झुकते हैं।

(*iii*) (घ) प्रेमचंद को मान-सम्मान तो मिलता था, पर वे धनहीन थे।

(*iv*) (ग) प्रेमचंद जैसे उच्चकोटि के साहित्यकार के धनहीन होने की विडंबना

(*v*) (घ) ताकतवर को अधिक सम्मान दिया जाने लगा है।

⑤ तुम समझौता कर नहीं सके। क्या तुम्हारी भी वही कमज़ोरी थी, जो होरी को ले डूबी, वही 'नेम-धरम' वाली कमज़ोरी? 'नेम-धरम' उसकी भी ज़ंजीर थी। मगर तुम जिस तरह मुसकरा रहे हो, उससे लगता है कि शायद 'नेम-धरम' तुम्हारा बंधन नहीं था, तुम्हारी मुक्ति थी! *(पृष्ठ 64)*

प्रश्न

(*i*) यहाँ कौन समझौता नहीं कर सका?

(क) लेखक
(ख) प्रेमचंद
(ग) होरी
(घ) इनमें से कोई नहीं

(*ii*) होरी को कौन-सी कमजोरी ले डूबी?

(क) नियम और धर्म की
(ख) शारीरिक कमजोरी
(ग) मानसिक कमजोरी
(घ) राजनीतिक कमजोरी

(*iii*) नेम-धरम उसकी भी ज़ंजीर थी—का क्या आशय है?

(क) उसका नेम-धरम मजबूत था
(ख) उसने नेम-धरम के कारण उन्नति की
(ग) नेम-धरम के कारण वह आजीवन दुख सहता रहा
(घ) इनमें से कोई नहीं

(*iv*) लेखक को प्रेमचंद के पाँव की उँगली किस ओर संकेत करती हुई प्रतीत होती है?

(क) सामाजिक नियम
(ख) सामाजिक प्रतिष्ठा
(ग) सामाजिक बुराइयाँ
(घ) इनमें से कोई नहीं

(*v*) परस्पर विपरीत अर्थ रखने वाले शब्द विकल्प से छाँटकर लिखिए—

(क) समझौता-कमजोरी
(ख) नेम-धरम
(ग) संकेत-इशारा
(घ) बंधन-मुक्ति

उत्तर

(*i*) (ख) प्रेमचंद

(*ii*) (क) नियम और धर्म की

(*iii*) (ग) नेम-धरम के कारण वह आजीवन दुख सहता रहा

(*iv*) (ग) सामाजिक बुराइयाँ

(*v*) (घ) बंधन-मुक्ति

प्रश्न–अभ्यास

(*पाठ्यपुस्तक से*)

1. हरिशंकर परसाई ने प्रेमचंद का जो शब्दचित्र हमारे सामने प्रस्तुत किया है उससे प्रेमचंद के व्यक्तित्व की कौन-कौन सी विशेषताएँ उभरकर आती हैं?

उत्तर लेखक ने प्रेमचंद का जो शब्द चित्र हमारे सामने प्रस्तुत किया है उससे उनके व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएँ सामने आती हैं–

(*i*) **सादा जीवन**–प्रेमचंद आडंबर तथा दिखावापूर्ण जीवन से दूर रहते थे। वे गाँधी जी की तरह सादा जीवन जीते थे।

(*ii*) **उच्च विचार**–प्रेमचंद के विचार बहुत ही उच्च थे। वे सामाजिक बुराइयों से दूर रहे। वे इन बुराइयों से समझौता न कर सके।

(*iii*) **स्वाभिमानी**–प्रेमचंद ने दूसरों की वस्तुओं को माँगना उचित नहीं समझा। वे अपनी दीन-हीन दशा में संतुष्ट थे।

(*iv*) **सामाजिक कुरीतियों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने वाले**–प्रेमचंद ने समाज में व्याप्त कुरीतियों के प्रति सावधान किया। वे एक स्वस्थ समाज चाहते थे तथा स्वयं भी बुराइयों से कोसों दूर रहने वाले थे।

(*v*) **अपनी स्थिति से संतुष्ट**–प्रेमचंद का जीवन सदा ही अभावों में बीता। उन्होंने अपनी स्थिति दूसरों से छिपाए रखी। वे जैसे भी थे उसी में खुश रहने वाले थे।

(*vi*) **संघर्षशील**–वे रास्ते में आने वाली मुसीबतों से बचकर नहीं निकलते थे बल्कि वे उनका सामना करते थे और उस पर विजय पाकर आगे बढ़ते थे।

2. सही कथन के सामने (✓) का निशान लगाइए–

(क) बाएँ पाँव का जूता ठीक है मगर दाहिने जूते में बड़ा छेद हो गया है जिसमें से अँगुली बाहर निकल आई है।

(ख) लोग तो इत्र चुपड़कर फोटो खिंचाते हैं जिससे फोटो में खुशबू आ जाए।

(ग) तुम्हारी यह व्यंग्य मुसकान मेरे हौसले बढ़ाती है।

(घ) जिसे तुम घृणित समझते हो, उसकी तरफ अँगूठे से इशारा करते हो?

उत्तर (क) (×) (ख) (✓) (ग) (×) (घ) (×)

3. नीचे दी गई पंक्तियों में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए–

(क) जूता हमेशा टोपी से कीमती रहा है। अब तो जूते की कीमत और बढ़ गई है और एक जूते पर पचीसों टोपियाँ न्योछावर होती हैं।

(ख) तुम परदे का महत्व ही नहीं जानते, हम परदे पर कुर्बान हो रहे हैं।

(ग) जिसे तुम घृणित समझते हो, उसकी तरफ हाथ की नहीं, पाँव की अँगुली से इशारा करते हो?

उत्तर (क) **व्यंग्य**–जूते का स्थान पाँवों में अर्थात् नीचे है यह सामर्थ्य अथवा ताकत का प्रतीक माना जाता है। टोपी का स्थान सिर पर अर्थात् सम्माननीय है पर स्थिति इसके विपरीत है। आज लोग अपने सामर्थ्य के बल पर अनेक टोपियों (सम्मानित एवं गुणी व्यक्तियों) को अपने जूते पर झुकने को विवश कर देते हैं और लोग अपना स्वाभिमान भूलकर अपना सिर उनके सामने झुकाते हैं।

(ख) **व्यंग्य**–लोगों में एक प्रवृत्ति होती है बुराइयों को छिपाने की या उन पर पर्दा डालने की। लोग अपनी बुराइयों को दूसरों के सामने नहीं आने देना चाहते हैं, पर प्रेमचंद ने अपनी बुराइयों को कभी छिपाने का प्रयास नहीं किया। वे भीतर-बाहर एक समान थे। दूसरे लोग पर्दे की आड़ में कुछ भी करते रहे हैं।

(ग) **व्यंग्य**–प्रेमचंद ने सामाजिक बुराइयों को अपनाना तो दूर उनकी तरफ देखा भी नहीं। उन्होंने इनकी तरफ हाथ से भी इशारा नहीं किया। इन्हें इतना घृणित समझा कि पैर की उँगली से उसकी ओर इशारा करते हुए दूसरों को भी उससे सावधान किया।

4. पाठ में एक जगह पर लेखक सोचता है कि 'फोटो खिंचाने की अगर यह पोशाक है तो पहनने की कैसी होगी?' लेकिन अगले ही पल वह विचार बदलता है कि 'नहीं, इस आदमी की अलग-अलग पोशाकें नहीं होंगी,।' आपके अनुसार इस संदर्भ में प्रेमचंद के बारे में लेखक के विचार बदलने की क्या वजहें हो सकती हैं?

उत्तर प्रेमचंद के बारे में लेखक के विचार बदलने के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं–

(*i*) लोग प्रायः ऐसा सोचते और करते हैं कि दैनिक जीवन में साधारण कपड़ों का प्रयोग करते हैं और विशेष अवसरों के लिए वे अच्छे कपड़े रखते हैं। प्रेमचंद के पास शायद दूसरी पोशाक नहीं थी।

(*ii*) लेखक सोचता है कि सादा जीवन जीने वाला यह आदमी भीतर-बाहर सब एक-सा है। इसका दोहरा व्यक्तित्व नहीं है, इन्होंने कभी दिखावटी जीवन नहीं जिया।

5. आपने यह व्यंग्य पढ़ा। इसे पढ़कर आपको लेखक की कौन सी बातें आकर्षित करती हैं?

उत्तर इस व्यंग्य में हमें लेखक की कई बातें आकर्षित करती हैं। सर्वप्रथम-लेखक ने व्यंग्यात्मक शैली में महान साहित्यकार प्रेमचंद का चित्र प्रस्तुत किया है। उनकी विशेषताओं से हमें परिचित कराया है। दूसरे लेखक ने प्रेमचंद पर व्यंग्य तो किया है, पर उसने स्वयं को कभी भी व्यंग्य से अलग नहीं रखा। तीसरे लेखक को मानव जीवन की अत्यंत गहरी समझ है। उसने जीवन के दुख-सुख को अत्यंत निकट से देखा है। चौथे-लेखक सामाजिक बुराइयों तथा कुरीतियों के प्रति भी सजग है। उसने व्यंग्य के माध्यम से इन पर भी प्रहार किया है।

6. पाठ में 'टीले' शब्द का प्रयोग किन संदर्भों को इंगित करने के लिए किया गया होगा?

उत्तर 'टीला' रास्ते में आने वाला वह अवरोध है जिसको लाँघना कठिन होता है। यहाँ व्यंग्य में टीला शब्द का प्रयोग प्रेमचंद के जीवन में आने वाली सामाजिक कठिनाइयों के लिए किया गया है, जिसे पंडित, पुरोहित, मौलवी, जमींदार आदि समाज के कथित ठेकेदारों ने खड़ी की है। इनके कारण ही ऊँच-नीच की भावना, जाति-पाँति, छुआछूत, बाल-विवाह, शोषण, बेमेल विवाह, अमीर-गरीब की भावना आदि टीले के रूप में खड़ी हो मार्ग को अवरुद्ध करती हैं।

रचना और अभिव्यक्ति

7. प्रेमचंद के फटे जूते को आधार बनाकर परसाई जी ने यह व्यंग्य लिखा है। आप भी किसी व्यक्ति की पोशाक को आधार बनाकर एक व्यंग्य लिखिए।

उत्तर मेरे घर के पास में एक डॉक्टर साहब रहते हैं। उनकी डिग्री के बारे में लोगों को आजतक नहीं पता लगा, क्योंकि उनसे पूछने पर एक ही जवाब मिलता है कि डिग्री से इलाज नहीं होता, इलाज होता है अनुभव से। तुम मेरा अनुभव देखो। सचमुच उन डॉक्टर सॉहब को मैंने जब भी देखा होगा, वे हमेशा ही अपने गले में स्टेथेस्कोप लटकाए रहते हैं। उनसे इलाज कराने जाओ तो वे पहले अपने अनुभव की चर्चा करते हैं, फिर अपनी अति व्यस्तता बताते हुए कहते हैं, जल्दी करो मुझे कई मरीज देखने बाहर जाना है, जबकि वे अपनी क्लीनिक छोड़कर बाहर नहीं निकलते हैं। बात करने पर लगेगा कि बराक ओबामा के बाद सबसे व्यस्त आदमी वही हैं। उनकी व्यस्तता सुन मरीज दुबारा उनके पास नहीं आते, पर उनकी व्यस्तता कम होने का नाम ही नहीं लेती है।

8. आपकी दृष्टि में वेश-भूषा के प्रति लोगों की सोच में आज क्या परिवर्तन आया है?

उत्तर आज के समय में लोगों की सोच और दृष्टिकोण में काफी बदलाव आ गया है। लोग प्रथम मुलाकात में व्यक्ति का स्वागत-सत्कार उसकी वेशभूषा देखकर ही करते हैं। आज गुणी-से-गुणी व्यक्ति भी अच्छे कपड़ों के अभाव में आदरणीय नहीं बन पाता है। ऐसे में लोग अपनी वेशभूषा के प्रति विशेष रूप से सजग हो गए हैं। लोग अपनी हैसियत जताने के लिए अच्छे कपड़े पहनते हैं। आज सादा-जीवन जीने वालों को पिछड़ा समझा जाने लगा है। अब तो ऐसे भी छात्र-छात्राएँ मिल जाएँगे जिन्हें पढ़ाई की चिंता कम अपने आधुनिक फैशन वाले कपड़ों की अधिक रहती है। संपन्न वर्ग को ऐसा करते देख मध्यम और निम्न वर्ग भी वैसा ही करने को लालायित हो उठा है।

भाषा-अध्ययन

9. पाठ में आए मुहावरे छाँटिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

उत्तर

मुहावरे	अर्थ	वाक्य में प्रयोग
(*i*) अटक जाना	स्थिर हो जाना	इस सुंदर तस्वीर पर मेरी दृष्टि अटक गई है।
(*ii*) कुएँ के तल में होना	बहुत गहराई में होना	तुम रुपये खोजने में इतनी देर लगा रहे हो, मानो रुपये कुएँ के तल में हैं।
(*iii*) न्योछावर होना	कुर्बान होना	चंद्रशेखर आजाद की जीवनी पढ़कर देश के लिए अपना सब कुछ अर्पण करने के साथ खुद भी न्योछावर होने का मन करता है।

(*iv*) लहूलुहान होना	घायल होना, खून से लथपथ होना	कार दुर्घटना में आगे की सीट पर बैठा व्यक्ति लहूलुहान हो गया।
(*v*) हौसले पस्त करना	हतोत्साहित करना	सहवाग की बल्लेबाजी ने विपक्षी टीम के हौसले पस्त कर दिए।
(*vi*) बरकाकर निकलना	बचकर निकलना	आज तुम उस दुकानदार को फिर बरकाकर निकल आए।
(*vii*) जूता आजमाना	अपमानित करना	इस व्यक्ति को बहुत समझा लिया, अब इस पर जूता आजमाना ही बाकी है।
(*viii*) रो पड़ना	पीड़ा महसूस करना	सुदामा की दीनदशा देख श्रीकृष्ण रो पड़े।
(*ix*) ठोकर मारना	चोट मारना	अब्राहम लिंकन अपनी गरीबी को ठोकर मार आगे बढ़ते हुए एक दिन अमेरिका के राष्ट्रपति बने।
(*x*) पछतावा होना	पश्चाताप होना	ऐसा कर्म करने के बाद आपको पछतावा होना चाहिए।
(*xi*) पहाड़ फोड़ना	कठिनाइयों पर विजय पाना	लंबे समय तक चले मुकदमे में न्याय मिलने के बाद लगता है कि तुमने पहाड़ फोड़ लिया है।
(*xii*) तकादे से बचना	उधार माँगने वालों से बचना	तकादे से बचने के लिए लोग पता नहीं क्या-क्या करते हैं।

10. प्रेमचंद के व्यक्तित्व को उभारने के लिए लेखक ने जिन विशेषणों का उपयोग किया है उनकी सूची बनाइए।

उत्तर प्रेमचंद के व्यक्तित्व को उभारने के लिए लेखक ने निम्नलिखित विशेषणों का प्रयोग किया है–

(*i*) साहित्यिक पुरखे
(*ii*) महान कथाकार
(*iii*) उपन्यास सम्राट
(*iv*) युग प्रवर्तक
(*v*) जनता के लेखक।

कुछ और प्रश्न

I. उच्च चिंतन एवं मनन क्षमताओं का आँकलन संबंधी प्रश्नोत्तर

1. प्रेमचंद फोटो में कैसे नजर आ रहे थे?

उत्तर फोटो में प्रेमचंद अत्यंत साधारण-सी वेषभूषा में नज़र आ रहे थे। उनके साथ में उनकी पत्नी थी। वे कुरता-धोती पहने, सिर पर टोपी लगाए थे। पाँवों में कैनवस के बेतरतीब बंद वाले जूते थे, जिनकी लोहे की पतरी गायब थी। उन्हें किसी तरह बाँध लिया गया था। बाएँ पैर के फटे जूते से उनके पैर की उँगली दिख रही थी।

2. 'गंदे-से-गंदे आदमी की फोटो भी खुशबू देती है' के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?

उत्तर इस वाक्य के द्वारा लेखक ने समाज में व्याप्त दिखावे और फैशन पर व्यंग्य किया है। लोग अपनी फोटो खिंचाते समय दूसरों से कपड़े, टाई, जूते आदि उधार लेते हैं। बाल सेट कराते हैं ताकि उनकी फोटो सुंदर आए। वे अपनी फोटो खिंचाते समय अपने बैठने का ढंग, मुख, मुद्रा आदि का विशेष ध्यान रखते हैं, जिससे उनकी फोटो अच्छी आए।

3. प्रेमचंद ने फटे जूते में भी अपनी फोटो खिंचा ली, पर लेखक ऐसा कभी न करता, क्यों?

उत्तर प्रेमचंद स्वभाव से सहज तथा सरल थे। वे अपनी गरीबी की स्थिति में खुशी-खुशी जीना सीख गए थे। वे अपनी स्थिति को छिपाना नहीं जानते थे। वे यथार्थ को स्वीकार करने वाले थे, इसलिए जैसे थे, वैसे ही दिखते थे। उन्होंने फटे जूतों के साथ फोटो खिंचा ली पर लेखक को उस स्थिति में हीनता और कमी नजर आती है। वह इसे छिपाना चाहता है, इसलिए इस दशा में फोटो न खिंचा पाता।

4. रास्ते में पड़ने वाले टीले के विषय में प्रेमचंद और लेखक के दृष्टिकोण किस प्रकार भिन्न हैं?

उत्तर रास्ते में पड़ने वाले टीले के विषय में प्रेमचंद और लेखक के दृष्टिकोण में मुख्य अंतर यह था कि प्रेमचंद उस टीले को हटाने के लिए उस पर ठोकर मारते रहे। भले ही ऐसा करते हुए उनका जूता फट गया पर लेखक उस टीले से बचकर निकल जाने वालों में था। अर्थात् प्रेमचंद सामाजिक कुरीतियों से लड़ने वालों में थे जबकि लेखक उनसे समझौता करने वालों में था।

5. 'प्रेमचंद के फटे जूते' पाठ में 'प्रेमचंद और होरी' की किस कमजोरी की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर इस पाठ में प्रेमचंद और होरी दोनों की एक ही कमजोरी की ओर संकेत किया गया है। वह कमजोरी है–नेम-धरम का पक्का होना। दोनों ने कभी भी धर्म के नियमों का उल्लंघन नहीं किया। वे अपने मूल्यों से कभी नहीं भटके। अपनी-अपनी मर्यादाओं की रक्षा के लिए वे दोनों आजीवन मुसीबतें झेलते रहे।

6. प्रेमचंद के जीवन से आज के युवाओं को क्या सीख लेना चाहिए? 'प्रेमचंद के फटे जूते' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर प्रेमचंद अत्यंत सादा जीवन जीने में विश्वास रखते थे। वे बनाव शृंगार और आडंबर से कोसों दूर रहते थे। उन्होंने फोटो खिंचवाने जैसे विशिष्ट मौके पर भी बनावटी वेशभूषा धारण करने का प्रयास नहीं किया। इससे आज के युवा जो फैशनपरस्ती और बनावटी जीवन जीने के लिए निकृष्ट कार्य करने से भी परहेज नहीं करते हैं, को आडंबरहीन एवं साधारण जीवन जीने की सीख लेनी चाहिए।

7. 'नेम-धरम की कमजोरी होरी के लिए बंधन बन गए'। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर होरी ने आजीवन नेम-धरम का पालन किया। वह नेम-धरम का पक्का था। उसने कभी मर्यादा एवं नैतिकता का साथ नहीं छोड़ा। इन्हीं नियमों और धर्म की आड़ में समाज ने उस पर अत्याचार किए, वहिष्कृत किया, पर वह नेम-धरम के कारण मानवीय मूल्य न त्याग सका और आजीवन गरीबी की मार झेलता रहा। इस प्रकार नेम-धरम उसके लिए बंधन बन गए थे।

II. लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लेखक प्रेमचंद के जूते देखकर क्यों रो पड़ना चाहता है?

उत्तर लेखक प्रेमचंद की वेषभूषा और जूते देखकर इसलिए रो पड़ना चाहता है क्योंकि इतना महान लेखक होने के बाद भी प्रेमचंद बदहाली की स्थिति से गुजर रहे थे। उसके पास विशेष अवसर पर भी पहनने के लिए अच्छे कपड़े और जूते न थे। लेखक उनकी स्थिति से उत्पन्न दुख को अपने भीतर तक महसूस कर रो देना चाहता है।

2. लेखक की नजर प्रेमचंद के जूतों पर क्यों अटक गई?

उत्तर लेखक की नजर प्रेमचंद के जूतों पर इसलिए अटक गई क्योंकि महान कथाकार, युग प्रवर्तक आदि नामों से जाना जाने वाले लेखक के पास ढंग के जूते भी नहीं हैं। जूतों के फीते बेतरतीब बँधें हैं। उनकी पतरियाँ निकल चुकी हैं। वे जैसे-तैसे बँधे हैं। बाएँ पैर का जूता फटने से उँगली बाहर निकल आई है। ये जूते लेखक की बदहाली बयाँ कर रहे हैं।

III. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'प्रेमचंद के फटे जूते' पाठ में लेखक द्वारा प्रेमचंद के जूते फटने के क्या कारण बताए गए हैं?

उत्तर 'प्रेमचंद के फटे जूते' पाठ में लेखक द्वारा उनके जूते फटने का निम्नलिखित कारण बताए गए हैं–

(*i*) प्रेमचंद के जूते फटने के कारण बनिया द्वारा दिया गया उधार के सामान का वह पैसा है, जिसके तकादे से बचने के लिए प्रेमचंद दूर का चक्कर लगाकर घर जाते थे।

(*ii*) उन्होंने किसी ऐसी चीज जो परत-दर-परत सदियों से जम गई थी, उस पर ठोकर मारकर अपना जूता फाड़ लिया था।

(*iii*) शायद प्रेमचंद ने अपने रास्ते में पड़ने वाले किसी टीले पर अपना जूता आजमाया हो, जिसकी ठोकर से उनका जूता फट गया हो।

2. लेखक ने प्रेमचंद को साहित्यिक पुरखा कहा है, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर लेखक ने प्रेमचंद को साहित्यिक पुरखा इसलिए कहा है क्योंकि प्रेमचंद अपने समय के लेखकों में ही नहीं बल्कि संपूर्ण हिंदी साहित्य में सर्वोच्च स्थान रखते थे। वे यथार्थवादी लेखक थे। उन्होंने अपने आसपास, देश, काल तथा समाज की स्थिति का सच्चा तथा वास्तविक चित्रण अपने लेखन में किया है। उनका लेखन इतनी उच्चकोटि का होता था कि बहुत अच्छा लिखने वाले की तुलना उनसे की जाती थी। उन्होंने जिन विषयों पर लेखनी चलाई उनकी प्रासंगिकता आज भी उतनी ही है। वे दूरद्रष्टा भी थे, जिन्हें तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थितियों का अच्छा ज्ञान था।

3. लेखक और प्रेमचंद के जूतों में क्या अंतर था? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर प्रेमचंद के दाहिने पैर का जूता ठीक है पर बाएँ पैर के जूते में ऊपर छेद हो गया है, जिससे उँगुली बाहर निकल आई है। उनके फीते बेतरतीब बँधे हैं। उनकी पतरी निकल चुकी है। इसके विपरीत लेखक का जूता ऊपर से तो ठीक है पर अँगूठे के नीचे का तला घिस गया है; जिससे उनका अँगूठा घिसकर लहूलुहान हो जाता है। इस तरह पूरा तला घिस जाएगा और उनका पूरा पंजा छिल जाएगा तथा वह चलने में असमर्थ हो जाएगा। इसके अलावा प्रेमचंद का पंजा सुरक्षित है पर लेखक का नहीं।

4. 'तुम भी जूते और टोपी के आनुपातिक मूल्य के मारे हुए थे' के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?

उत्तर इस पंक्ति के माध्यम से लेखक ने साहित्यकार प्रेमचंद की गरीबी एवं खराब स्थिति पर व्यंग्य किया है। प्रेमचंद उच्चकोटि के साहित्यकार थे, जिन्हें टोपी की तरह सिर पर धारण किया जाना था अर्थात् उनका भरपूर सम्मान किया जाना था, पर समाज में टोपी के बजाए जूते की कीमत अधिक आँकी जाती थी। जो सम्मान के पात्र नहीं है उन्हें मानसम्मान दिया जाता है। यहाँ तो स्थिति यह है कि टोपी को जूते के सामने झुकना पड़ता है। प्रेमचंद उच्चकोटि के साहित्यकार होने के बाद भी अपनी मूलभूत आवश्यकताएँ पूरी करने में विवश थे। वे गरीबी में जीवन-यापन कर रहे थे।